वीसीडी नं.178 ऑडिओ नं.659 अनकापल्ली मण्डल ता.24.01.05

डायरेक्ट वाणी

गोद में जाकर खूब खेलते हैं। तो गोद को कहा जाता है– कुख। हिंदी में गोद को कोख कहते हैं। कुखवंशावली हो। तो जिन्होंने कोख को ज़्यादा देखा, कोख का ज़्यादा सुख लिया, देह का सुख लिया वो हुए कुखवंशावली ब्राह्मण और जिन्होंने मुख से ज्ञान सुना और मुख से सुना हुआ ज्ञान अपनी बुद्धि में धारण किया और दूसरों को सुनाया वो हो गए मुखवंशावली। जो मुखवंशावली ब्राह्मण होते हैं वो हैं थोड़े और जो कुखवंशावली होते हैं वो होते हैं ढेर। वो देह का सुख लेते हैं। तो शास्त्रों में उनकी देह बड़ी–2 दिखाई गई हैं। जैसे रावण, कुंभकरण और मेघनाद के बड़े–2 बुत बनाए जाते हैं; क्योंकि उन्होंने देह का सुख लिया है और राम–लक्ष्मण को छोटा–2 दिखाया जाता है। ऐसे ही कंस और कृष्ण का युद्ध दिखाते हैं तो कंस बहुत लंबा–चौड़ा और कृष्ण–बलराम को छोटा–2 दिखाते हैं। तो इसका मतलब यह हुआ कि जिनमें ज़्यादा देहभान होता है, वो हैं रावण सम्प्रदाय जैसे ब्राह्मण और जिनमें ज्ञान ज़्यादा होता है तो ज्ञान की वजह से वो आत्मिक स्थिति में रहते हैं। देहभान न होने के कारण वो आत्माएँ ज्ञान सुनने और सुनाने में ज़्यादा मस्त रहती हैं।

तो जब मिक्स हो गए, वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसे वो श्रेष्ठ ब्राह्मण भी उसमें हैं और रावण, कुंभकरण, मेघनाद जैसे दुष्ट ब्राह्मण भी हैं। उन दुष्टों की संख्या बहुत ज़्यादा हो जाती है तो परमात्मा को फिर युक्ति रचनी पड़ती है। सतयुग के आदि में जो नारायण या कृष्ण वाली आत्मा थी, वही जन्म लेते–2 कलियुग के अंत में दादा लेखराज ब्रह्मा जो बनती है, उस ब्रह्मा का चोला छोड़ देते हैं, शरीर छूट जाता है। तो वो कृष्ण का जो चोला था वो प्यार भरा चोला था। देखने–सुनने में भी अच्छा था और मुख से बोल में भी अच्छा था। उनके जो मधुर बोल थे, उनको शास्त्रों में मुरली/बाँसुरी दिखा दी है। बाँसुरी की तान मीठी होती है ना! तो शास्त्रकारों ने कृष्ण को मुरली/बाँसुरी दिखा दी है। (किसी ने कहा– सुनने में बहुत अच्छी है) हाँ, सुनने में बहुत अच्छी लगती है; लेकिन क्या होता है कि जो दुष्ट प्रकृति के ब्राह्मण होते हैं वो उस मीठी तान का उल्टा अर्थ उठाते हैं। जैसे कोई परिवार में माँ होती है। माँ बहुत प्यार से बच्चों को संभालती है; लेकिन दुष्ट बच्चे उसका नाज़ायज़ फायदा उठाते हैं। ऐसे ही ब्रह्माकुमारी आश्रम में हुआ। जो दुष्ट ब्राह्मण थे, उन दुष्ट ब्राह्मणों ने दुष्टता कर–करके ब्रह्मा का दिल इतना ज़्यादा दुखाया–ब्रह्मा माना बड़ी अम्मा–इतना दिल दुखाया कि उनको हार्टअटैक हो गया।

यह बात शास्त्रों में भी दिखाई है। शास्त्रों में दिखाया है कि कृष्ण के पाँव में बहेलिये ने तीर मारा और वो मर गए। तो ये पाँव की बात नहीं है। जैसे पाँवों से कहीं चलकर जाया जाता है तो ऐसे ही पाँव का मिसाल देते हैं कि तुम्हारे बुद्धि रूपी पाँव गुरुजी तक नहीं पहुँच पाएँगे। तो कोई इस पाँव में तीर लगने से उनकी मौत नहीं हो सकती। वो नम्रचित की जो आत्मा थी उस (...) कोई नम्रचित होता है और कोई कठोर दिल होता है। तो जो कठोर दिल वाला आदमी होता है उसको तो कोई बातों का असर नहीं होगा और जो कमज़ोर दिल का आदमी होता है उसको बात का असर ज़्यादा हो जाता है, तो उनका हार्टफेल हुआ और शरीर छोड़ दिया। परमात्मा जो उनमें प्रवेश करके मीठी–2 भाषा सुना रहा था, मीठी–2 वाणी सुना रहा था, मुरली सुना रहा था, वो काम बंद हो गया। आसुरी ब्राह्मण बढ़–चढ़कर इतने ज़्यादा बढ़े कि उन्होंने सारी संस्था को अपनी मुट्ठी में ले लिया। वो वहाँ काबिज़ हो गए। अपनी कुर्सी पर बैठ गए। और जो श्रेष्ठ पुरुषार्थी ब्राह्मण थे, जिनमें से कोई तो जगदम्बा सरस्वती मम्मा को फॉलो करते थे, जो ब्रह्मा बाबा की सहयोगिनी थी। और कोई ऐसे थे जो ब्रह्मा बाबा को फॉलो करते थे, ब्रह्मा बाबा को ज़्यादा पसंद करते थे। तो वो मम्मा और बाबा को पसंद करने वाले ब्राह्मण जो हैं, यज्ञ से टूट गए; क्योंकि मम्मा ने शरीर छोड़ा तो वो चले गए। दो/तीन साल के बाद ब्रह्मा ने शरीर छोड़ा तो जो उनको पसंद करने वाले थे वो भी चले गए।

अब उसमें रह गए सिर्फ देहधारी गुरुओं को मानने वाले। तो उन्होंने सारा यज्ञ अपने हाथ में कर लिया। अब उसमें एक ग्रुप और रह गया वो ग्रुप वो जो कि यज्ञ के आदि में ही, शुरुआत में जब सन् 1936/37 में ब्रह्मा के द्वारा काम शुरू हुआ था, (किसी ने कहा– 1936) हाँ, 36 में। वो आत्माएँ ऐसी थीं जिन्होंने यज्ञ का पूरा फाउंडेशन डाला, सारा साज–संभाल की; लेकिन जब देखा कि इस यज्ञ के अंदर वो आसुरी ब्राह्मण घुस रहे हैं तो उन्होंने ऑपोज़िशन किया। उस समय इतना ऑपोज़िशन हो गया था कि दो अलग–2 ग्रुप हो गए। एक आसुरी ब्राह्मणों को फॉलो करने वाला ग्रुप और एक वो श्रेष्ठ ब्राह्मण जो यज्ञ के शुरुआत में ही छोड़–छोड़कर चले गए। तो वो आत्माएँ दुबारा जन्म ले करके फिर यज्ञ में आती हैं। तो तीसरा ग्रुप फिर तैयार हो गया। वो श्रेष्ठ ग्रुप जो यज्ञ के आदि में था, वो आत्माएँ वो हैं जिन्होंने यज्ञ के आदि में राम वाली आत्मा जब तक रही तब तक उसका साथ दिया और जब शुरुआत में वो राम की आत्मा ऑपोज़िशन करके छोड़कर चली गई, तो पीछे–2 वो भी चली गईं। वही आत्माएँ फिर दुबारा यज्ञ में जन्म ले करके, मम्मा के शरीर छोड़ने से ले करके और ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने तक दुबारा यज्ञ में आने लगीं अपना दूसरा जन्म लेकर। इसलिए गीता में लिखा है कि यह ज्ञान जो है, इसका कभी

विनाश नहीं होता। भले शरीर छूट जाए तो भी दूसरा जन्म ले करके जब वो आत्मा आएगी तो उसके अंदर वो ज्ञान इमर्ज हो जाएगा। (किसी ने कहा– संस्कार) हाँ जी–2।

तो वो आत्माएँ दुबारा आती हैं। आते ही (...) उनमें सबसे पहले राम वाली जो आत्मा आती है, वो आ करके अपना संगठन वहाँ तैयार करना शुरू कर देती है और परमात्मा शिव जो है, जिसने ब्रह्मा का शरीर छोड़ दिया था, वो राम वाले व्यक्तित्व में प्रवेश कर जाता है। अंतिम जन्म में कृष्ण वाली सोल तो ब्रह्मा का रूप धारण करती है, वो माँ का पार्ट हुआ। जैसे माँ प्यार से बच्चों को पालती है; लेकिन जो बच्चे प्यार में बिगड़ जाते हैं–माँ के प्यार से, उन बिगड़े हुए बच्चों को सुधारने के लिए फिर परमात्मा को राम वाले व्यक्तित्व में प्रवेश करके शंकर का कड़क रूप धारण करना पड़ता है। ज्ञान के प्वॉइंट्स वही रहते हैं, जो ब्रह्मा के मुख से बोले थे। ब्रह्मा के मुख से जो प्वॉइंट्स बोले थे वो प्वॉइंट ब्रह्मा के मुख से बाँसुरी की मीठी तान लग रही थी। वही प्वॉइंट्स, फिर शंकर के द्वारा उनका नया अर्थ निकलता है, तो वो मुरली की जो मीठी तान थी वो बदल करके राम के बाण बन जाते हैं। जैसे कहते हैं ना– यह क्या बोलता है, जैसे बाण मारता है।

तो कृष्ण के मंदिर में तो मीठी तान वाली बाँसुरी दिखाते हैं और शंकर और शिव के मंदिर में नगाड़ा दिखाते हैं– गड़गऽऽ गड़ऽऽऽ धुम। तो वो प्रलय कोई स्थूल प्रलय की बात नहीं होती है पहले। यह जो ब्राह्मणों की दुनियाँ तैयार हुई इस ब्राह्मणों की दुनियाँ में जो आसुरी ब्राह्मण हैं, आसुरी ब्राह्मणों को नष्ट करने के लिए, उनकी नाक नीची करने के लिए, परमात्मा जो है वो राम वाली आत्मा शंकर के द्वारा ऐसे–2 ज्ञान के बाण छोड़ता है, जिससे वो डाउन हो जाते हैं माने उनका निश्चय उखड़ जाता है। अनिश्चय बुद्धि हो जाते हैं। खलास हो जाते हैं। शरीर से खतम होने की बात नहीं है, बुद्धि से उनका मनोबल डाउन हो जाता है। और जो देवताई ब्राह्मण हैं, जो ब्राह्मण से देवता बनने वाले हैं, श्रेष्ठ आचरण करने वाले हैं, अच्छा पुरुषार्थ करने वाले हैं, उनका उमंग–उत्साह बढ़ जाता है। उनका उमंग–उत्साह इतना ज़्यादा बढ़ता है कि वो इतना श्रेष्ठ पुरुषार्थ करते हैं कि थोड़े ही टाइम में वो नर से नारायण जैसे देवता बन जाते हैं और देवताओं की दुनियाँ स्थापन हो जाती है और असुरों की कलियुगी दुनियाँ खलास हो जाती है। तो सारी सृष्टि पर उन ब्राह्मणों का राज्य हो जाता है। देवताओं का राज्य हो जाता है।

इसलिए हमारे यहाँ जो झण्डारोहण करते हैं तो उसमें तीन रंग दिखाते हैं– नीचे हरा रंग ब्रह्मा का, जो स्वर्ग ही स्वर्ग, स्वर्ग की हरियाली देखता रहता था और ऊपर लाल रंग। लाल रंग माना विनाश का सूचक, खूनी क्रांति। खूनी क्रांति दो तरह की– एक होती है मन के अंदर संकल्पों का खून बहता है। संकल्प आपस में टकराते हैं। उसको कहते हैं संकल्पों का खून। और यह संकल्पों की खूनी क्रांति जब ब्राह्मणों की दुनियाँ में पूरी हो जाती है, तब फिर बाहर की दुनियाँ में स्थूल खून की नदियाँ बहती हैं और दुनियाँ में विनाश हो जाता है। तो नीचे का हरा रंग ब्रह्मा का, ऊपर का लाल रंग शंकर का और बीच में सफेद रंग विष्णु का; सतयुग का सूचक। तो ये तीन कपड़े दिखाए जाते हैं झण्डे में। कपड़ा माने यह शरीर रूपी वस्त्र। जैसे गीता में कहा है ना कि यह शरीर जो है वस्त्र है। आत्मा इस पुराने वस्त्र को त्याग देती है और नया वस्त्र धारण कर लेती है। तो ऐसे ही ये तीन वस्त्र हैं। इन तीन शरीर रूपी वस्त्रों के द्वारा सारे विश्व के अंदर विजय प्राप्त होती है। ये ब्रह्मा, ये विष्णु, ये शंकर– ये तीन पात्र जो हैं, ये तीन देवताएँ जो हैं, वो मिल करके सारे विश्व के ऊपर, भारतवर्ष के अंदर अपना परचम फैला देते हैं। बाकी ऐसी कोई बात नहीं है कि कपड़े का झण्डा विश्व विजय करके दिखलावे। ये शरीर रूपी तीन वस्त्र हैं, जिन तीन वस्त्रों के द्वारा परमात्मा शिव अभी सारे विश्व के ऊपर हम भारतवासियों को विश्व विजय करा देंगे। तो ये तीन कपड़ों को पहचानना है। तीन शरीर रूपी जो वस्त्र हैं, चैतन्य वस्त्र, उनको पहचानना है और वही पहचान देने के लिए यह सारा ज्ञान है।

अभी जो युद्ध चल रहा है, वो ब्राह्मणों की दुनियाँ के अंदर जो राक्षस सम्प्रदाय हैं, जो ब्राह्मण सम्प्रदाय हैं, उनके बीच का युद्ध चल रहा है। ब्राह्मणों की दुनियाँ में जब यह युद्ध पूरा होगा तो नई दुनियाँ की स्थापना हो जाएगी। ब्राह्मण–देवताओं का छोटा रूप तैयार हो जाएगा। फिर बाहर की दुनियाँ में आग लगेगी। 100 साल के अंदर सभी धर्मपिताओं ने आ करके अपना–2 धर्म स्थापन किया है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक सबने ज़्यादा से ज़्यादा 100 साल लिए हैं। इसी तरह परमात्मा भी सन् 1936 में आया और सन् 2036 में जा करके यह सारा काम पूरा हो जाएगा। उसमें दो मूर्तियों का काम पूरा हो गया। टाइम पूरा हो गया। ब्रह्मा के 33 वर्ष और शंकर के 33 वर्ष ये अब पूरे होने जा रहे हैं एक/दो साल के अंदर और ब्राह्मणों की दुनियाँ में असुरों का सफाया होने जा रहा है। वो सफाया होगा और दूसरी तरफ एक छोटा–सा संगठन जो है वो तैयार हो जाएगा। और उस छोटे–से संगठन की पालना विष्णु के द्वारा शुरू हो जाएगी।

विष्णु कोई अलग से चार हाथ–पाँव वाला व्यक्ति नहीं होता है। ये ब्रह्मा की सहयोगिनी शक्ति सरस्वती, जिन्होंने सन् 1966 में शरीर छोड़ा था और शंकर की सहयोगिनी शक्ति पार्वती माने राम की सहयोगिनी शक्ति सीता ये दोनों ही मिल करके जो रूप बनता है, वो बनता है वैष्णवी देवी। ओमराधे ने शरीर छोड़ा, वो सूक्ष्म शरीरधारी बन गई, वो प्रवेश करती है। तो वो ओमराधे। तो जो सम्पन्न रूप बनता है वो वैष्णवी देवी कही जाती है। और उस वैष्णवी देवी के पीछे शक्ति देने वाला जो रूप है, वो है ब्रह्मा की सोल प्लस ब्रह्मा चंद्रमा के रूप में दिखाया जाता

है। तो राम के अंतिम जन्म में ब्रह्मा की सोल भी चंद्रमा के रूप में प्रवेश करती है और शिव की सोल तीसरे नेत्र के रूप में प्रवेश करती है; इसलिए एक ही शरीर में तीन आत्माएँ काम करती हैं। एक राम वाली आत्मा शरीरधारी, दूसरी चंद्रमा ब्रह्मा वाली आत्मा और तीसरी शिव वाली आत्मा, तो उसको कहते हैं त्रिनेत्री शिव। माने तीन आत्मा रूपी नेत्र हैं। शंकर, 'शं' माना शिव, 'क' माना कृष्ण, 'र' माना राम। शिव, कृष्ण, राम ये तीनों जिस शरीर में मिक्स हो जाते हैं उनको कहते हैं– 'शंकर'। शंकर माना मिक्स। जैसे कहते हैं वर्ण संकर।

यह जो शंकर का रूप है, वो तीनों कपड़ों में सबसे ऊपर का रूप दिखाया जाता है। देव–2 महादेव। उनको महादेव क्यों कहा जाता है? ब्रह्मा ने जो काम किया, वो वही काम किया जो सब धर्मपिताओं ने किया। ब्रह्मा ने जो धर्म–स्थापना का काम किया वो ब्राह्मण धर्म स्थापन किया; लेकिन असुरों का विनाश नहीं किया। तो जब असुरों का विनाश नहीं हुआ, वो ज़्यादा तादाद में ज्यों के त्यों बने रहे, तो ब्राह्मणों को कोई पूछता नहीं। मिक्स हो जाते हैं। तो इसलिए जितने भी धर्मपिताएँ आए, उन्होंने सबने अपना–2 धर्म स्थापन कर दिया; लेकिन पुरानापन जो चला आ रहा था, पुराने धर्म जो चले आ रहे, उनका विनाश नहीं किया, उनका ऑपोज़िशन नहीं किया। तो पुराना भी चलता रहा और उसमें नया भी मिक्स कर दिया। जैसे विष का भरा हुआ घड़ा हो या आधा घड़ा विष से भरा हुआ है और उसमें कोई आधा घड़ा दूध का ओर डाल दे, तो क्या हो जाएगा? पूरा विष हो जाएगा। ऐसे ही उन धर्मपिताओं ने आकर क्या किया, अपना–2 ज्ञान सुना दिया। उन्होंने सुधारने की कोशिश तो की; लेकिन थोड़े समय के बाद फिर दुनिया नीचे गिरने लगती है, नई दुनिया नहीं बनती। तो जितने भी धर्मपिताएँ आए उन्होंने आ करके इस दुनिया की मरम्मत तो की, रिपेयरिंग तो की; लेकिन परिवर्तन नहीं हुआ। परिवर्तन तब होता है जबकि पुरानेपन का विनाश किया जाए और नए धर्म की स्थापना की जाए। क्योंकि पुराने धर्मों का अगर विनाश करते वो धर्मपिताएँ, तो उनको ऑपोज़िशन सहन करना पड़ता। इतनी उनमें ताकत नहीं थी; लेकिन यह तो परमात्मा का कार्य है। परमात्मा तो शक्तिशाली है। तो जो ज़्यादा शक्ति का काम है, मुकाबला करने का काम, वो फिर महादेव शंकर के द्वारा कराते हैं। तो शंकर को महादेव कहा जाता है।

कोई पूछे कि शंकर को महादेव क्यों कहते हैं? 33 करोड़ देवताओं को देव कहते हैं, देवता। विष्णु को देवता कहते हैं, ब्रह्मा को देवता कहते हैं, शंकर को महादेव क्यों कहते हैं? वो इसलिए कहते हैं जो काम किसी ने नहीं किया, वो काम वो कर देता है। सारी आसुरी दुनिया में जो आसुरी धर्म फैले हुए हैं उन आसुरी धर्मों का ऑपोज़िशन करके और उनका संघार कराय देता है। इसलिए कहते हैं कि भगवान शिव किसलिए आते हैं? **धर्मसंस्थापनार्थाय विनाशाय च दुष्कृताम्। (4/8) गीता** में लिखा है ना कि सत् धर्म की स्थापना करने आता हूँ और दुष्ट धर्मों का विनाश करने के लिए आता हूँ। तो अपने–2 धर्म की स्थापना तो सब कर लेते हैं; लेकिन जो पुराने–2 धर्म फैले हुए हैं, जो बहुत तामसी हैं, बहुत दुष्ट धर्म हैं, उनका विनाश किसी ने नहीं किया। तो वो विनाश का कार्य शंकर के द्वारा सम्पन्न (होता है)। इस तरह से यह कार्य चल रहा है। पहले कार्य छोटे रूप में होता है।

यह दुनिया जो है एक तरह से सृष्टि रूपी मकान है। वो सृष्टि रूपी मकान जैसे बनता है, कोई मकान बनाया जाता है, तो पहले इंजीनियर की बुद्धि में खाक़ा/प्लैन तैयार होता है, नक्शा तैयार होता है। वो छोटा रूप हुआ। फिर वह प्लैन जो है वो प्रैक्टिकल में आता है। जमीन में मकान की नींव भरी जाती है। बिल्डिंग तैयार होती है। है ना? तो पहले सूक्ष्म रूप आता है, फिर स्थूल रूप आता है। ऐसे ही नई दुनिया की प्लैनिंग ले करके परमात्मा अब इस सृष्टि पर आ गया। हम ब्राह्मणों की बुद्धि में नई दुनिया की प्लैनिंग आ चुकी है। ब्राह्मणों की दुनिया में नई दुनिया भी स्थापन हो रही है और पुरानी दुनिया का विनाश करने के लिए, जो 'हर–2, बम–2' वो ज्ञान के एटम बॉम्ब भी तैयार हो चुके हैं। ज्ञान के जो एटम बॉम्ब तैयार हो रहे हैं, उनसे आसुरी दुनिया का सारा विनाश, ब्राह्मणों की दुनिया का विनाश हो जाएगा। उसके बाद फिर स्थूल काम होगा। वो बाद में जो कार्य होगा वो बड़ी दुनिया के लिए होगा, स्थूल दुनिया के लिए, उसमें ये बड़े–2 एटम बॉम्ब फटेंगे। दुनिया का खलासा होगा। ब्राह्मणों की छोटी दुनिया की स्थापना हो रही है। एक तरफ पुरानी दुनिया में जो ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया है, बहुत फैली हुई है ईरान से तूरान तक, हर एक शहर में, हर एक गाँव में, हर एक महानगर में, हर एक विदेश में, ये ब्रह्माकुमारी आश्रम फैले हुए हैं– इन सबका खलासा। जब सारे ही खलास हो जाएँगे तब नए तरीके से फिर से स्थापना शुरू होगी। फिर सारी दुनिया में सभी सेंटरों पर लिखना पड़ेगा– **"आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय"**। अभी लिखा हुआ है– **"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय"**। इसलिए यहाँ चारों तरफ ब्रह्मा का नाम रोशन हो रहा है, ब्रह्माकुमारियों का नाम रोशन हो रहा है; लेकिन जब शंकर का कार्य सम्पन्न हो जाएगा तब ब्रह्मा का कार्य खतम, ब्रह्मा का नामनिशान खतम हो जाएगा। इसलिए दुनिया में भी ब्रह्मा के मंदिर नहीं बनाए जाते, ब्रह्मा की पूजा नहीं होती, ब्रह्मा की मूर्तियाँ नहीं बनाई जातीं।

जब त्रिदेव कहे जाते हैं, तो ब्रह्मा का काम क्यों नहीं दिखाया जाता? ब्रह्मा के मंदिर क्यों नहीं बनाए जाते? ब्रह्मा की मूतियाँ क्यों नहीं बनाई जातीं? ब्रह्मा की पूजा क्यों नहीं होती? क्योंकि ब्रह्मा के द्वारा जो कार्य शुरू हुआ वो अधूरा रह गया। इसलिए जैसे इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट की पूजा नहीं होती। उनके मंदिर नहीं बनते। उनकी मूर्तियाँ बनती हैं तो मंदिर में नहीं रखी जातीं। मंदिर में रखकर पूजा नहीं होती। ऐसे ही ब्रह्मा के भी नहीं बनते। क्यों?

क्योंकि ब्रह्मा ने माँ के रूप में पार्ट बजाया। जो माँ के रूप में पार्ट चलता है वो कोमल पार्ट है। जिस घर में बाप नहीं होता तो बच्चे माँ के ऊपर कंट्रोल करने लगते हैं। घर बिगड़ जाता है। जिस घर में बाप नहीं रहता, माँ का ही कंट्रोल रहता है तो माँ के प्यार में बच्चे बिगड़ जाते हैं। बाप कंट्रोलर होता है। तो ऐसे ही ब्राह्मण परिवार की यह हालत हुई है। इसलिए इन आसुरी ब्राह्मणों ने ही ब्रह्मा का नाम डुबो दिया और वो जो ब्रह्मा संसार में ब्रह्मा के रूप में पूजा जाता उसका नामनिशान खतम कर दिया। इसलिए दो देवताओं की पूजा होती है– विष्णु की और शंकर की। ब्रह्मा की न पूजा होती है, न मंदिर बनते हैं, न मूर्तियाँ बनती हैं, जैसे और धर्मपिताओं का नहीं बनता।

अभी यह जो कार्य चल रहा है वो ज्ञानी तू आत्माओं के समझने की चीज़ है। इसलिए रामायण में कहा है– **''ज्ञानी प्रभु विशेष प्यारा।''** ज्ञानी आत्मा मुझे विशेष प्रिय है। बाकी कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी की तरह जो खाते रहते हैं, पेट भरते रहते हैं, सोते रहते हैं, ऐसे ही ज़िंदगी गँवाय देते हैं, वो तो जीव–जंतु हैं। वो प्राणी वो श्रेष्ठ प्राणी नहीं हैं जिन्हें कहा जाता है– **'मनुष्य'**। जो मन का उपयोग करे वो मनुष्य। जो मन–बुद्धि का उपयोग न करे–जैसे जानवर हैं– खाते हैं, पीते हैं, रहते हैं, सोते हैं, ऐसे ही अगर सारी ज़िंदगी बिताय दी–तो मनुष्य में और जानवर में क्या फ़र्क रहा! अभी क्या करना है? यहाँ तो देखो तुम्हारे गाँव में छोटी–2 कन्याओं ने आ करके सारा ज्ञान पकड़ लिया। शास्त्रों में भी यह बात दिखाई है कि छोटी–2 कन्याओं ने बड़े–2 भीष्मपितामह जैसे बड़े–2 गुरुओं को बाण मारे हैं। बाण कोई लोहे के बाण नहीं मारे, ज्ञान के बाण मारे। यह तो गाँव बहुत भाग्यशाली है। गाँव वालों को खूब सहयोग देना चाहिए। यह तो हमने रजिस्टर देखा तो इसमें कोई नहीं है। बस, दो ही लोग आते हैं क्लास में। क्लास में दो ही लोग आ रहे हैं।

(किसी ने पूछा– वेदान्ती कौन है?) जो राजघराना बनता है ना। राजपरिवार। उस राजपरिवार में भी दो माताएँ होती हैं– एक होती है राजमाता और दूसरी होती है राजलक्ष्मी। (किसी ने पूछा– राजमाता कौन है?) राजलक्ष्मी जो होती है वो महाराजा के साथ–2 कुर्सी पर बैठती है और राजमाता जो होती है, वो अलग एक कुर्सी ऊँची जगह पर डाली जाती है और वहाँ वो बैठती है। उसका मान–मर्तबा बहुत होता है। यह परंपरा हमारे घरों–2 में भी चली आ रही है। जिसे सास कहते हैं ना। वो सास को बहुत मान्यता दी जाती है; लेकिन घर–गृहस्थ का संचालन जो है वो बहुरानी करती है। इसलिए ब्राह्मणों की दुनिया में भी दो माताएँ हैं– एक तो जगतमाता और दूसरी है भारतमाता। (किसी ने पूछा– भारतमाता कौन है?) भारतमाता वो शक्ति है जिसे हम कहते हैं– राजलक्ष्मी। लक्ष्मी बनने वाली आत्मा कहो, राधा बनने वाली आत्मा कहो, पार्वती कहो और अव्वल नंबर सीता कहो। जब राम, रावण का विनाश करने के लिए चले, तो उन्होंने सीता की एक सोने की मूर्ति बनाई और वो पंचवटी में रख दी और जो असली सीता थी उससे कहा– **तुम पावक में करो निवासा** तुम अग्नि में निवास कर जाओ माना योग अग्नि में बैठ जाओ। **जब लगी करूँ निशाचर नासा** जब तक मैं निशाचरों का नाश करूँ तब तक तुम योग अग्नि में बैठो।

तो इस तरीके से इस यज्ञ में भी यही काम चल रहा है। और जो राजलक्ष्मी बनने वाली है, वो योगयुक्त स्टेज में अपना कार्य कर रही है और उसकी जो सोने की मूर्ति बनाई गई है, वो है जगदम्बा। सारे जगत की अम्बा। वो जगदम्बा का ही दूसरा रूप सब धर्मों में माना जाता है– प्रकृति, कुदरत, नेचर। उससे सब धर्मों का जन्म होता है; लेकिन जो आसुरी धर्म हैं, वो उसको ज़्यादा मान्यता नहीं देते हैं। जन्म तो देती है; लेकिन मान्यता नहीं देते हैं। तो जो मान्यता नहीं देते हैं इसलिए वो उन सबका विनाश कराय देती है, असुर संघारणी बनती है, महाकाली का रूप धारण कर लेती है। तो जगदम्बा जो है वो महाकाली का रूप धारण करके ब्राह्मणों की दुनिया में जो असुर हैं उन सबका विनाश कर देती है। (किसी ने कहा– भारतमाता!) भारतमाता और जगतमाता। जगतजननी, जगदम्बा। जगतजननी जगदम्बा और भारतमाता माना पार्वती कहो या लक्ष्मी कहो वो।

जैसे दो देवियाँ विशेष मुख्य हैं, ऐसे ही दो देवताएँ मुख्य हैं– राम और कृष्ण। उनके ये संगमयुगी वर्तमान समय के नाम हैं– ब्रह्मा और शंकर। ब्रह्मा की सहयोगिनी शक्ति सरस्वती और शंकर की सहयोगिनी शक्ति पार्वती। उनके सतयुग–त्रेता के नाम भी हैं। नारायण की सहयोगिनी शक्ति लक्ष्मी। राम की सहयोगिनी शक्ति सीता। वही जन्म लेते–2 कलियुग के अंत में आ करके फिर हमारे–तुम्हारे चोले में हैं। ठीक है! ओम् शांति।